International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 6, November 2021 |

प्रगतिवाद और रांगेय राघव

DR. DEEPALI SHARMA

Assistant Professor, SD Govt. College, Beawar, Rajasthan, India

सार

रांगेय राघव हिंदी के सर्वोच्च रचनाकारों में से एक हैं। वे विलक्षण रचनाकार थे, जिनके लिए लिखना ही जीवन था। उन्होंने कम उम्र में विपुल लेखन किया। रांगेय राघव को महज उनचालीस साल उम्र मिली और उन्होंने इतने ही उपन्यास लिखे। दस कहानी संग्रह, छः काव्य संग्रह, तीन नाटक और इसके अलावा रिपोर्ताज, आलोचना, इतिहास और दर्शन आदि पर कई किताबें लिखीं। उनकी कुल किताबों की संख्या 100 से ज्यादा है। अध्ययन के शुरुआती पच्चीस साल अलग कर दें, तो उन्होंने महज चौदह सालों में बेशुमार काम किया। हिंदी साहित्य में इस मामले में सिर्फ राहुल सांकृत्यायन ही उनकी जोड़ी के हैं। पराधीन भारत में अंग्रेजी साम्राज्य विरोधी चेतना के विकास और स्वाधीनता आंदोलन में उनकी सक्रिय हिस्सेदारी रही। न सिर्फ अपने लेखन से बल्कि एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर उन्होंने आंदोलनों में भाग लिया। भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुराणों का उनका विस्तृत अध्ययन था। खास तौर से पुरातत्व और इतिहास से उन्हें प्यार था। जो कि उनकी रचनाओं में भी झलकता है। रांगेय राघव की मातृभाषा हिंदी नहीं थी, लेकिन वे हिंदी के लिए अपनी आख़िरी सांस तक कुर्बान रहे। उन्होंने भारतीय परम्परा, संस्कृति और कला का मूल्यांकन मार्क्सवादी नज़रिए से किया। अपने लेखन से दलित, शोषित, वंचितजनों में एक नई चेतना विकसित की।

परिचय

उत्तर प्रदेश में आगरा के बागमुजफ्फर खां इलाके में 17 जनवरी, 1923 को एक तमिल भाषी आयंगर परिवार में जन्मे तिरूमल निम्बाक्कम वीर राघव ताताचार्य उर्फ टीएन वीर राघव आचार्य का नाम रांगेय राघव कैसे पड़ा, उन्हीं की ज़बानी, ''मेरा एक नाम तो टी.एन.वी. आचार्य और दूसरा वीर राघव था। मैं कोई वीर था नहीं और टीएनवी हिंदी के लिए उपयुक्त नाम नहीं था। मेरे पिता का नाम रंगाचारी था, अतः मैंने अपना नाम रंगा का बेटा रांगेय राघव कर लिया।' ' पन्द्रह साल की छोटी उम्र से ही उन्होंने लिखना शुरू कर दिया था। साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में वे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। यही नहीं आज़ादी के आंदोलन में जब भी मौका मिलता, वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मदद करते। अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ पैम्फलेट तैयार करके, उन्हें बांटते। नौजवानी में अंग्रेजी कहानियों से प्रभावित होकर, उन्होंने 'अंधेरी की भूख' नाम का कहानी संग्रह लिख डाला था। इस संग्रह की ज्यादातर कहानियां भूत-प्रेतों की कहानियां थीं। बाद में वे कविताओं की ओर उन्मुख हुए। शुरुआत में उन्होंने कविताएं ही ज्यादा लिखीं। साल 1944 में आया 'अजेय खंडहर' , रांगेय राघव का पहला खंडकाव्य था। इस खंडकाव्य में उन्होंने स्तालिनग्राद में लड़े गए युद्ध में लाल सेना की बहादुरी और नाजियों की बर्बरता की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति की थी।[1,2,3]

स्तालिनग्राद के संघर्ष को उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ दिया था। 'अजेय खंडहर' के अलावा 'मेधावी' और 'पिघलते पत्थर' कविता संग्रह में भी उन्होंने साम्राज्यवाद, सामंतवाद, शोषण, असमानता और वर्गभेद के खिलाफ अपनी आवाज उठाई। 'मेधावी' प्रबंध काव्य जो बेहद चर्चित एवं पुरस्कृत हुआ, उसमें एक जगह उनके क्रांतिकारी विचार हैं,''विश्व होगा केवल सुख स्थान/एक घर सी होगी यह भूमि/बनाएंगे मानव वह पंथ/जहां शोषण का रहे न नाम/जहां का सत्य वास्तविक सत्य/जहां स्वातंत्र्य साम्य, सुख शांति/करेंगे निषिदिन नृत्य।' ' 'मेधावी' , 'राह के दीपक' और 'पिघलते पत्थर' रांगेय राघव के शुरूआती कविता संग्रह हैं।[4,5]

रांगेय राघव की आला तालीम आगरा के सेंट जोंस कॉलेज और आगरा कॉलेज से हुई। 'गोरखनाथ और उनका युग' विषय पर उन्होंने पीएचडी की। यह शोध कार्य उन्होंने शांति निकेतन में रहकर किया। 'शांति निकेतन' के माहौल से उन्हें जो प्रेरणा मिली, उसके बाद तो उनके लेखन का सिलसिला रुका नहीं। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद रांगेय राघव चाहते, तो एक अच्छी नौकरी कर शानदार जीवन बिताते, लेकिन उन्होंने लेखन को चुना। लेखन को ही अपनी आजीविका और समाज सुधार का माध्यम बनाया। लिखने की रफ्तार उनकी ऐसी थी कि कहानी, एक दिन में ही लिख देते थे। कहानी ही नहीं, उनके कुछ उपन्यास भी एक-दो दिन में लिखे गए हैं। 'पराया' और 'काका' उपन्यास उन्होंने सिर्फ दो-दो दिन में लिख डाले थे। शेक्सपियर के पन्द्रह नाटकों का अनुवाद रांगेय राघव ने सिर्फ पन्द्रह दिन में पूरा कर लिया था। यही नहीं अपनी प्रसिद्ध किताब 'प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास' उन्होंने सिर्फ एक महीने में लिखी थी। इसी तरह उनकी अद्वितीय कहानी 'गदल' लिखी गई थी। यह कहानी अपने समय की चर्चित लघु पत्रिका 'कहानी' में छपी। कहानी छपते ही हिंदी साहित्य में तहलका मच गया। आज भी यह कहानी हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ कहानी मानी जाती है। आलोचक शिवदान सिंह चौहान ने 'गदल' की प्रशंसा करते हुए लिखा था, ''गदल को भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट प्रतिनिधि कहानियों के साथ

रखा जा सकता है।' ' 'गदल' का अनुवाद भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी हुआ। 'गदल' के अलावा 'पंच परमेश्वर', 'देवदासी', 'नई जिंदगी के लिए' आदि उनकी कहानियां भी अपने समय में काफी चर्चा में रहीं।[6,7]

साल 1946 में आया 'घरौंदे' रांगेय राघव का पहला उपन्यास है। इसी साल बंगाल अकाल पर उनका एक और उपन्यास 'विषादमठ' आया। 'मुर्दों का टीला' वह उपन्यास है, जिससे रांगेय राघव को देशव्यापी प्रसिद्धि मिली। ईसा से 3500 वर्ष पूर्व मोअन-जो-दड़ो की सभ्यता को केन्द्र बिंदु बनाकर लिखे गए इस उपन्यास में उनका विस्तृत अध्ययन देखते ही बनता है। हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास में 'मुर्दों का टीला' का विशेष स्थान है। देश के प्राचीन इतिहास से रांगेय राघव का गहरा लगाव था। 'अंधेरे के जुगनू', 'प्रतिदान', और 'चीवर' में ऐतिहासिक और पौराणिक किरदारों के इर्द-गिर्द उन्होंने उपन्यास बुने हैं। उनका ऐतिहासिक उपन्यास 'महायात्रा' दो खंडों 'अंधेरा रास्ता' एवं 'रैन और चंदा' शीर्षक से है। 'अंधेरा रास्ता' में जहां प्रागैतिहासिक काल वर्णित है, तो वहीं 'रैन और चंदा' में उन्होंने जनमेजय से लेकर अजातशत्रु तक यानी बर्बर दासप्रथा से सामंती व्यवस्था के उदय तक की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों का ब्यौरा दिया है। 'एक छोड़ एक', 'जीवन के दाने', 'साम्राज्य का वैभव', 'समुद्र के फेन', 'अधूरी मूरत', 'अंगारे न बुझे', 'इंसान पैदा हुआ', 'मेरी प्रिय कहानियां' आदि रांगेय राघव के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।[8,9]

रांगेय राघव का आलोचना कर्म भी काफी व्यापक है। 'काव्य, कला और शास्त्र', 'भारतीय चिंतन', 'समीक्षा और आदर्श, 'काव्य, यथार्थ और प्रगति', 'हिंदी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्वपीठिका', 'भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका', 'तुलसीदास का कथा-शिल्प' और 'आधुनिक हिंदी कविता में विषय और शैली' उनकी प्रमुख आलोचना संबंधी किताबें हैं। इसमें भी उनकी किताब 'गोरखनाथ और उनका युग' एवं 'प्रगतिशील साहित्य के मानदंड' हिंदी आलोचना में मील का पत्थर मानी जाती हैं। साल 1943-44 में बंगाल में जब सदी का भयंकर अकाल पड़ा, तो उन्होंने न सिर्फ यह देखने, जानने-समझने के लिए बंगाल की यात्रा की, बल्कि इस पूरी यात्रा में उन्होंने जो जाना-भोगा उसे रिपोर्ताज के तौर पर लिखा। ये रिपोर्ताज उस वक्त की चर्चित पत्रिकाओं 'हंस' और 'विशाल भारत' पत्रिका में सिलसिलेवार प्रकाशित हुए। बाद में यह रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' किताब की शक्ल में आए। 'तूफानों के बीच' हिंदी साहित्य का पहला रिपोर्ताज माना जाता है। इस रिपोर्ताज में रांगेय राघव ने बड़े ही संवेदनशील तरीके से अकाल को चित्रित किया है। साम्राज्यवादी अंग्रेजी हुकूमत और देशी मुनाफाखोरों द्वारा कृत्रिम तौर पर पैदा किए गए इस भीषण अकाल की विभीषिका को उन्होंने रिपोर्ताज के ज़रिए पूरे देश तक पहुंचाया।[10,11]

रांगेय राघव एक साहित्यकार के साथ-साथ संस्कृतिकर्मी भी थे। वे 'आगरा कल्चरल स्क्वैड' से भी जुड़े रहे। बाद में जब आगरा इप्टा का गठन हुआ, तो वे इसके सक्रिय सदस्य हो गए। इप्टा से रांगेय राघव अपने आखिरी समय तक जुड़े रहे। एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह वे इप्टा के आयोजनों में शिरकत किया करते थे। बंगाल अकाल पर उन्होंने कई जज़्बाती और जोशीले जन गीत और एक नृत्य नाटिका लिखी। उनके जनगीत "टेम्स हो या यांक्सी क्यांग/वोल्गा हो या गंगा हो/सबकी एक लड़ाई है/दुनिया की आज़ादी की' ', "गांव-गांव नगर-नगर में आज यही ललकार उठे/परदेशी का राज न हो, बस यही हुंकार उठे' ' और "बापू बोल-बोल/यह है देश की पुकार/जिन्ना बोल-बोल…' ' उस समय देश भर में काफी लोकप्रिय हुए। इप्टा के कलाकारों के साथ वे खुद ये गीत गाते थे। इप्टा की प्रस्तुतियों के जरिए उन्होंने बंगाल अकाल पीड़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करने का काम भी किया। गोवा के मुक्ति आंदोलन पर लिखा उनका पूर्णकालिक नाटक 'आख़िरी धब्बा' आगरा इप्टा द्वारा अनेक बार मंचित हुआ। नाटक के गीत, संवाद और छाया अभिनय हर चीज मशहूर हुई। खास तौर पर इस नाटक में इस्तेमाल गीत जो शैलेन्द्र, राजेन्द्र रघुवंशी और खुद रांगेय राघव ने लिखे थे। उन्होंने नाटक की जरूरत के मुताबिक इसमें कई मानीख़ेज गीत लिखे। मसलन ' 'उठ-उठ रक्त उबाल/देख धरती आकाश/आज हुए दोनों लाल/मां तेरी सौगंध हमें, हम हथकड़ियां तड़कायेंगे/हो सुहागिनी बन रणचंडी तेरा दूध निभायेंगे।' ' [11,12]

विचार-विमर्श

रांगेय राघव के कई चर्चित उपन्यास और कहानियां समाज के बीच से ही निकलकर आई हैं। नटों के जीवन पर 'कब तक पुकारूं' और लोहपीटे या गड़रिया लोहारों पर उन्होंने 'धरती मेरा घर' जैसे क्लासिक उपन्यासों की रचना कर दी थी। 'कब तक पुकारूं' का नायक करनट 'सुखराम' से वे अपनी ज़िंदगी में मिले थे। उससे करनटों की जिंदगी को न सिर्फ उन्होंने बारीकी से जाना था, बल्कि नटों की बस्ती में जाकर उन्हें रू-ब-रू भी देखा था। यही वजह है कि उपन्यास के किरदार और हालात यथार्थ के करीब दिखलाई देते हैं। साल 1955 में जब यह उपन्यास आया, तो इसने हिंदी साहित्य में हलचल मचा दी। बीसवीं सदी की चौथी और पांचवीं दहाई में हिंदी साहित्य के अंदर जो प्रगतिशील आंदोलन चला, उसमें भी रांगेय राघव की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आगरा में प्रगतिशील लेखक संघ की जो बैठकें होती, उनमें वे नियमित शामिल होते थे। बाबू गुलाबराय, डॉ. नगेन्द्र, नेमिचंद जैन, डॉ. रामविलास शर्मा, अमृतलाल नागर और भारतभूषण अग्रवाल जैसे नामवर साहित्यकार भी इन बैठकों में उनके साथ हिस्सा लिया करते थे। प्रगतिशील लेखन में रांगेय रागव ने रचनात्मक, वैचारिक योगदान दिया। साल 1954 में आई उनकी किताब 'प्रगतिशील साहित्य के मानदंड', कई महत्वपूर्ण सवालों की पड़ताल करती है। इस किताब में उन्होंने बड़े ही बेबाकी और तर्कशीलता से अपने विचार रखे हैं।

रांगेय राघव की मार्क्सवाद में गहरी आस्था थी। लेकिन वे देश, काल और परिस्थितियों के मुताबिक इस विचारधारा पर चलने को कहते थे। उनका साफ कहना था,''मार्क्सवाद यह नहीं कहता कि प्रत्येक देश में एक-सा ही विकास होता है। वह यही बतलाता है कि अनेक विभिन्नताओं के बीच एक समता होती है, पर इसका अर्थ यह नहीं होता है कि इंग्लैंड में जो कुछ हुआ, वही सब जर्मनी में भी होना चाहिए। या चीन में भी उसकी पुनरावृत्ति होनी चाहिए।[13,14]

यह समझने पर अनेक भ्रांतियां दूर हो जाती हैं। जिस देश पर हम विचार करें, पहले उस पर मार्क्सवाद लागू न करें, वरन् उस भूमि को समझें, जिस पर मार्क्सवाद लागू करना है। अर्थात् जिस देश के विषय में सोचें उसका इतिहास जान लें। मार्क्स के महान सिद्धांत हवा में पैदा नहीं हुए, इतिहास के मनन के परिणाम थे।' ' ('प्रगतिशील साहित्य के मानदंड' , पेज-256) रांगेय राघव का मानवता और वैश्विक भाईचारे में गहरा यकीन था। उनके मन में एक ऐसे समाज की कल्पना थी जिसमें असमानता, अत्याचार और शोषण न हो। महिलाओं और दलित, वंचितजनों को उनके अधिकार मिलें। समाज के आधार में समानता हो। एक वर्गविहीन समाज जिसमें न कोई छोटा, न कोई बड़ा हो। जाति, धर्म, लिंग, रंग, भाषा और नस्ल के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव न हो। उपन्यास 'कब तक पुकारूं' में वे एक जगह कहते हैं,''शोषण की घुटन सदैव नहीं रहेगी। वह मिट जाएगी। सत्य सूर्य है। यह सदैव मेघों से घिरा नहीं रहेगा। मानवता पर से यह बरसात एक दिन अवश्य दूर होगी। और तब नयी शरद में नए फूल खिलेंगे, नया आनंद व्याप्त हो जाएगा।' '

परिणाम

रांगेय राघव हिंदी साहित्य के ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिनकी हिंदी साहित्य की सेवा को दुनिया भुला नहीं सकती। महज 39 वर्ष की उम्र में दुनिया को अलविदा कहने वाले रांगेय ने मात्र 14 वर्ष की उम्र में लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था। रांगेय राघव, जब 11वीं कक्षा में पढ़ते थे, तभी उनका उपन्यास 'घरौंदा' आ गया था। विश्वभर में अपनी कलम की धाक जमाकर उन्होंने उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, आलोचक, नाटककार, कवि और इतिहासवेत्ता के रूप में पहचान बनाई। डा. श्रीभगवान शर्मा ने बताया कि रांगेय राघव ने 'गुरु गोरखनाथ और उनका युग' विषय पर आगरा विश्वविद्यालय (वर्तमान डा. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय) से पीएचडी की थी। शोध कार्य के दौरान उन्होंने नाथ साधुओं के वेश को भी अपना लिया था। दीक्षांत समारोह में वह पीएचडी की डिग्री लेने नहीं गए थे। उन्हें लिखने का बहुत शौक था। वह बिना किसी ब्रेक के उपन्यास, कहानी, साहित्य लेखन के साथ ही अनुवाद भी किया करते थे।[15,16]

रांगेय का हिंदी साहित्य आज अविरल धारा

हिंदी के शेक्सपियर कहे जाने वाले रांगेय राघव का साहित्य आज भी लोगों के जेहन में बसता है। युवा पीढ़ी उनके साहित्य के प्रगतिवादी दृष्टिकोण की अविरल धारा को सीखने की कोशिश करती है। युवाओं का कहना है कि उनके द्वारा लिखा साहित्य आज भी प्रासंगिक है।

रांगेय राघव हिंदी साहित्य के विलक्षण कथाकार, लेखक व साहित्यकार थे। जीवन में जब कठिनाइयां आती हैं, तो उनकी लिखी कविता जब मयकदे से निकला मैं राह के किनारे, मुझसे पुकार बोला प्याला वहां पड़ा था..., मेरे जेहन में आती है। इससे मुश्किल में भी जीवन अच्छी तरह जीने की प्रेरणा मिलती है। श्री मधुरेश ने निःसंग मेध से रांगेय राघव के विषय में इस भ्रांति का भी निराकरण किया है कि रांगेय राघव 'नस्लवादी' थे। यह भयंकर आरोप डॉ. रामविलास शर्मा ने लगाया था। मधुरेश जी का यह मत मान्य है कि उस समय तक और आज तक, भारत के प्रागैतिहासिक युग (मोहन जोदड़ो) के विषय में निर्विवाद जानकारी उपलब्ध नहीं है और यह कि रांगेय राघव का ध्यान सर्वत्र 'व्यवस्था' पर केंद्रित रहता था और मानव शोषण और अत्याचार के विरोध पर तथा मानवतावादी प्रवाह की खोज पर। इसीलिए द्रविड़ों पर आर्य अत्याचार हो या मुसलमानों पर आंग्ल-आक्रमण हो, वह सर्वत्र हृदय से आक्रांत, शोषित, दमित के साथ रहते हैं और जालिमों का विरोध करते हैं, चाहे जुल्मी आर्य हो या अनार्य, यवन हो या ब्राह्मण, मुसलमान हो या कम्युनिस्ट। सर्वत्र राघव ने मानव-न्याय का परिचय दिया है। [17,18]

माकर्सवादी आलोचक के रूप में केवल मधुरेश ने उनके महत्त्व को रेखांकित किया, 1987 में जब उन्होंने साहित्य अकादेमी के लिए मोनोग्राफ लिखा 'रांगेय राघव'। इस मोनोग्राफ में उन्होंने बाकायदे एक अध्याय लिखा 'हिंदी की माकर्सवादी आलोचना और रांगेय राघव'। उनका मानना था कि 'सन् '45 से '55 तक का काल हिंदी की माकर्सवादी आलोचना में प्रखर विवादों का काल रहा है और इन विवादों के आपसी अंतर्विरोध ही वस्तुतः हिंदी क्षेत्र में प्रगतिवादी आंदोलन के विघटन और माकर्सवादी आलोचना में भयंकर गतिरोध के कारण भी बने। यह दौर माकर्सवादी हिंदी आलोचना में ऐसी भयावह उग्रता और विनाशकारी उच्छेदवाद का दौर रहा है जिसमें अपने निकट वर्तमान में प्रगतिवादी साहित्य के निर्माण और विकास की संभावनाओं के प्रति पूरी तरह उदासीन रहकर बेहद गलत मुद्दों पर सारी बहस को केंद्रित कर दिया है।'[19,20]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 6, November 2021 |

निष्कर्ष

इसका काल सन 1936 से 1942 तक माना जाता है। प्रगतिवाद राजनीति के साम्यवादी आंदोलन (communist movement) का साहित्यिक रूप है। प्रगतिवादी आंदोलन का संबंध मार्क्सवादी आंदोलन से है। प्रगतिवाद के मूल में द्वन्दात्मक भौतिकवाद (dialectical materialism) है। इसके अनुसार विश्व में हमेशा दो तत्व सक्रिय रहे हैं : एक विधेयात्मक (positive) और दूसरा निषेधात्मक (negative)। प्रत्येक देश में दो शक्तियों में द्वंद (conflict) चलता रहता है[21,22] जिसका आधार पदार्थ (matter) है। इस प्रकार समाज में हमेशा दो वर्ग रहे हैं: एक शोषक (Oppressor) वर्ग और दूसरा शोषित (Oppressed) वर्ग। यह दर्शन पूरी तरह से भौतिकतावादी है। इसलिए उसे धर्म, ईश्वर, किसी आध्यात्मिक शक्ति, स्वर्ग-नरक आदि पर विश्वास नहीं है। यह पूंजीवाद, सामंतवाद आदि का विरोधी है। वह "कला कला के लिए" के स्थान पर "कला जीवन के लिए" के सिद्धांत पर विश्वास करता है। कला के प्रति उसका दृष्टिकोण यथार्थवादी (Realist) है। समाज के उत्थान में पूंजीवादी व्यवस्था को नष्ट कर शोषण विहीन स्माज की स्थापना साम्यवाद का उद्देश्य है।[23,24]

1917 में रूस में सशस्त्र क्रांति और ज़ारशाही के समाप्त होने के बाद संसार भर में पूंजीवाद व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन शुरू हो गए थे। उससे प्रभावित होकर सन 1935 में ई.एम. फार्स्टर की अध्यक्षता में प्रगतिशील लेखक संघ (Progressive Writers Association) नामक संस्था की स्थापना हुई। बाद में सन 1936 में प्रेमचंद की अध्यक्षता में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ का पहला अधिवेशन लखनऊ में हुआ। जैसे द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता,उपदेशात्मकता और स्थूलता के प्रति विद्रोह में छायावाद शुरू हुआ,उसी प्रकार छायावाद की सूक्ष्मता,कल्पनात्मकता, व्यक्तिवादिता और समाज-विमुखता के विरोध में प्रगतिवाद का जन्म हुआ।सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को उद्देश्य मानकर लिखा जाने वाला समस्त साहित्य प्रगतिवादी या प्रगतिशील साहित्य माना जाता है। प्रगति' का अर्थ होता है- 'आगे बढ़ना' और 'वाद' का अर्थ है "किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित सिद्धांत"। इस तरह से प्रगतिवाद का अर्थ है 'आगे बढ़ने का सिद्धांत'।[25,26]

समाज में व्याप्त सभी प्रकार की विषमताओं और विसंगतिओं का को सही रूप में दिखाना ही प्रगतिवादी साहित्य का लक्ष्य है। जबकि छायावादी आंदोलन केवल कविता तक सीमित था, किन्तु प्रगतिवाद केवल कविता तक सीमित नहीं रहा। इसने कहानी, उपन्यास, समीक्षा/आलोचना आदि सभी साहित्यिक विधाओं को प्रभावित किया।[27,28,29]

कुछ प्रमुख प्रगतिवादी साहित्यकार हैं: केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रामविलास शर्मा, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह सुमन,त्रिलोचन, मुक्तिबोध आदि।[30,31,32]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. शर्मा , रामविलास , भाषा , युगबोध और कविता , पृ . -178, वाणी प्रकाशन , तृतीय संस्करण - 2010, नई दिल्ली
2. वही , पृ . -178
3. सिंह , नामवर , छायावाद , पृ . -151-152, राजकमल प्रकाशन , पाँचवी आवृत्ति - 2003, नई दिल्ली
4. राघव रांगेय , प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड , पृ . -7, सरस्वती पुस्तक सदन , आगरा , प्रथम संस्करण - 1954
5. रहबर , हंसराज : प्रगतिवाद पुनर्मूल्यांकन , पृ . -13, विभूति प्रकाशन , शाहदरा , दिल्ली , द्वितीय संस्करण - 1981
6. वही , पृ . -17
7. जनवाणी , 1948
8. भारती , धर्मवीर : , प्रगतिवाद : एक समीक्षा , पृ . -14, साहित्य भवन , लिमिटेड , प्रयाग , प्रथम संस्करण - 1949
9. विशाल भारत , नवम्बर , 1938
10. सिंह , चंद्रबली , आलोचना का जनपक्ष , पृ . - 225-226, वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण - 2003
11. सिंह , नामवर , आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ , लोकभारती , प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण - 2005, पृ . - 61
12. वही , पृ . -11-12
13. अवस्थी , रेखा , प्रगतिवाद और समानांतर साहित्य , स्वराज प्रकाशन , दिल्ली प्रथम संस्करण - 1978, पृ . - 18

14. चौहान कर्ण सिंह , प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास प्रकाशन संस्थान , नई दिल्ली - संस्करण - 1998, पृ . -2
15. प्रधान सुधी - 'मार्क्सवाद कल्चरल मूवमेंट , नेशनल बुक एजेंसी , कलकत्ता , 1979, भूमिका , पृ . -6, (कर्ण सिंह चौहान की किताब प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास , पृ . -2-3 से)
16. देव , अर्जुन (सं .), जवाहरलाल नेहरू : संघर्ष के दिन , चुने हुए वक्तव्य नेशनल बुक ट्रस्ट , नई दिल्ली , संस्करण - 1996, चौथी आवृत्ति - 2005, पृ . -264
17. सीतारामय्या , डॉ . बी . पट्टाभि , कांग्रेस का इतिहास , खण्ड - I सस्ता साहित्य मण्डल , नई दिल्ली , संस्करण - 2009, पृ . -251
18. वही , पृ . -251
19. चौहान , कर्ण सिंह , प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास प्रकाशन संस्थान , नई दिल्ली , संस्करण - 1998, पृ . -4
20. चौहान कर्णसिंह , प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास , प्रकाशन संस्थान , नई दिल्ली , संस्करण - 1998, पृ . -6
21. आलोचना - 77, 1986, पृ . - 28
22. पामदत्त रजनी , आज का भारत , (अनु .)- रामविलास शर्मा , ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन , दिल्ली , संस्करण - 2000, पृ 0-24
23. वही , पृ 0-24
24. वही , पृ 0- 34
25. कांग्रेस का इतिहास - खण्ड - I, डॉ . बी . पट्टामि सीतारामय्या सस्ता साहित्य मण्डल , नई दिल्ली , संस्करण - 2009, पृ 0-288
26. सरकार , सुमित आधुनिक भारत , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , संस्करण - 1993, बारहवीं आवृत्ति - 2005, पृ 0- 287
27. पामदत्त रजनी , आज का भारत , (अनु .)- रामविलास शर्मा , ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन , दिल्ली , संस्करण - 2000, पृ 0-313
28. सीतारामय्या , डॉ . बी . पट्टामि कांग्रेस का इतिहास , सस्ता साहित्य मण्डल , नई दिल्ली , संस्करण - 2009, पृ 0-160
29. देउस्कर , सखाराम गणेश , देश की बात , पृ 0-80, (अनु 0- बाबूराव विष्णु पराड़कर) , आवृत्ति , 2010 नेशनल बुक ट्रस्ट , नई दिल्ली
30. प्रधान , अवधोश , स्वामी सहजानन्द सरस्वती और उनका किसान आंदोलन , नई किताब , संस्करण - 2011, पृ 0-48
31. अभिनव कदम , अंक - 26, पृ 0-496
32. सिंह भगत ; बम का दर्शन और अदालत में बयान , पृ . 11, दूसरा पुनर्मुद्रण , सितम्बर - 2011, राहुल फाउण्डेशन लखनऊ